

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-1* *Issue-4* *November 2024*

मन के पांच-स्तरीय सिद्धांत (Five-Tier Theory of Mind)**डॉ० संजय कुमार**

सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग, समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश—

सिगमंड फ्रायड ने मनोविज्ञान में “मन के त्रि-स्तरीय सिद्धांत” प्रस्तुत किया, जिसके अनुसार मानव मन तीन स्तरों में विभाजित है— चेतन (Conscious), अवचेतन (Subconscious) और अचेतन (Unconscious)। चेतन स्तर वह भाग है जो प्रत्यक्ष रूप से अनुभव और विचार करता है, अवचेतन में स्मृतियाँ और विचार अस्थायी रूप से संग्रहीत रहते हैं, जबकि अचेतन में दबी हुई इच्छाएँ, भावनाएँ और दुराग्रह छिपे रहते हैं।

संवर्धित पांच स्तरीय मॉडल में फ्रायड के मूल सिद्धांत को आधुनिक मनोविज्ञान के साथ जोड़ा गया है। इसमें संज्ञानात्मक (Cognitive) और भावनात्मक (Emotional) प्रक्रियाओं को भी शामिल किया गया है, जिससे यह समझा जा सके कि व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय और व्यक्तित्व का निर्माण इन तीनों स्तरों के परस्पर प्रभाव से होता है। यह मॉडल मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विश्लेषण और मनोचिकित्सा के क्षेत्र में गहन समझ प्रदान करता है तथा आधुनिक युग में मानव व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन का एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द— चेतन, मनोचिकित्सा, संज्ञानात्मक, त्रिस्तरीय सिद्धांत, पांच स्तरीय सिद्धांत, आनुवंशिक आधार, अव्यावहारिकता।

प्रस्तावना

मानव मन हमेशा से रहस्यपूर्ण रहा है। बाहरी तौर पर हम किसी व्यक्ति के व्यवहार, उसकी वाणी और उसके कार्य को देखते हैं, लेकिन उस व्यवहार के पीछे कौन-सी शक्तियाँ काम कर रही हैं, यह जानना हमेशा कठिन रहा है। मनोविज्ञान इसी कठिनाई को समझने का प्रयास करता है। बीसवीं सदी की शुरुआत में सिगमंड फ्रायड ने मानव व्यक्तित्व और मानसिक प्रक्रियाओं की गहराई को समझने के लिए जो ढाँचा प्रस्तुत किया, वह आज भी मनोविज्ञान की आधारशिला माना जाता है।

फ्रायड का मन का त्रिस्तरीय सिद्धांत— Id, Ego और Superego— यह दर्शाता है कि हमारे भीतर की आदिम प्रवृत्तियाँ, वास्तविकता से तालमेल और नैतिकता का संघर्ष लगातार चलता रहता है। यही संघर्ष हमारे व्यवहार, विचार और भावनाओं को दिशा देता है।

जहां तक मेरा मानना है कि आज के परिवेश में किसी व्यक्ति के व्यवहार के बारे में फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मन का त्रिस्तरीय सिद्धांत सही ढंग से व्याख्या नहीं कर पा रहा है। हम देखते हैं कि Freud के मूल सिद्धांत में, 'Id'— जन्मजात प्रवृत्तियाँ, इच्छाएँ, सुख-तृप्ति का सिद्धांत (Pleasure Principle) पर आधारित है जबकि 'Ego'— वास्तविकता से संबंध स्थापित करने वाला भाग, यथार्थवादी निर्णय और सामाजिक नियमों के अनुसार व्यवहार करने वाला है।

सामान्यतः माना जाता है कि जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, व्यक्ति का व्यवहार Id से Ego की ओर शिफ्ट होता है। परंतु आज की उपभोक्तावादी और प्रतिस्पर्धी दुनिया में, जहां लोगों में भौतिक सुख-सुविधाओं की चाह, व्यक्तिगत इच्छाओं को सर्वोपरि मानने की प्रवृत्ति, सामाजिक जीवन में भी स्वहित के साथ इच्छाओं की त्वरित

संतुष्टि, इत्यादि व्यवहारों में Id की प्रधानता स्पष्ट दिखाई देती है, चाहे व्यक्ति वयस्क ही क्यों न हो। जबकि होना तो यह चाहिए की परिपक्वता आने के साथ Id का स्थान Ego लें। दूसरी तरफ ईगो और सुपर ईगो के साथ भी यहीं असमंजस की स्थिति है।

इस लेख में मैंने Id, Ego और Superego के बीच दो नए कांसेप्ट Pre-Ego और Ethico-Ego को जोड़ते हुए मन के पांच स्तरीय सिद्धांत की व्याख्या की है जो व्यवहार को सटीक ढंग से अध्ययन करने में मददगार साबित होगा। सबसे पहले हम फ्रॉयड के मन का त्रिस्तरीय सिद्धांत की व्याख्या करेंगे, ताकि इनके बीच नए कॉन्सेप्ट्स की आवश्यकता और उनकी संरचना को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

Id: मानव मन की आदिम जड़ें

फ्रॉयड के अनुसार Id हमारी मानसिक संरचना का सबसे आदिम और अवचेतन हिस्सा है। इसका जन्म के साथ ही अस्तित्व होता है।

Id की विशेषताएँ—

1. आनुवंशिक आधार— शिशु जब जन्म लेता है, तो उसके भीतर भूख, प्यास, नींद, सुरक्षा और यौन-प्रवृत्ति जैसी सहज इच्छाएँ होती हैं। ये सब Id में निहित रहती हैं।
2. Pleasure Principle— Id हमेशा तुरंत सुख चाहता है। इसे वास्तविकता, समय या परिस्थितियों की कोई परवाह नहीं होती।
3. अवचेतन प्रक्रिया— Id का बड़ा हिस्सा अवचेतन में छिपा रहता है, और व्यक्ति को उसका सीधा ज्ञान नहीं होता।
4. अव्यावहारिकता— Id को न तो सामाजिक नियमों की परवाह होती है, न ही नैतिकता की।

उदाहरणस्वरूप, एक शिशु को भूख लगते ही वह रोने लगता है। उसे इस बात की परवाह नहीं कि माँ व्यस्त है या थकी हुई है। किसी व्यक्ति का गुस्से में तुरंत मारने या चिल्लाने का मन करता है। हम देखते हैं कि ऐसी स्थिति में Id जीवन के लिए आवश्यक है, क्योंकि यह हमें जीवित रहने और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन केवल Id पर आधारित जीवन अराजक और असंयमित हो जाएगा।

Ego: वास्तविकता से सामंजस्य

जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, उसे यह अनुभव होता है कि उसकी हर इच्छा तुरंत पूरी नहीं हो सकती। यहाँ पर Ego का विकास होता है।

Ego की विशेषताएँ—

1. Reality Principle— Ego वास्तविकता के आधार पर निर्णय लेता है।
2. मध्यस्थ की भूमिका— Ego, Id की इच्छाओं और बाहरी वास्तविकता के बीच संतुलन बनाता है।
3. सचेत और अवचेतन दोनों स्तरों पर सक्रिय— Ego का एक हिस्सा व्यक्ति को स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है, जबकि दूसरा हिस्सा अवचेतन में काम करता है।
4. व्यावहारिकता— Ego यह सोचता है कि कौन-सा कार्य कब, कैसे और कहाँ करना उचित होगा।

उदाहरणस्वरूप, किसी को भूख लगी है, लेकिन वह जानता है कि भोजन पकने में अभी समय लगेगा, तो वह प्रतीक्षा करता है। कोई छात्र खेलना चाहता है, लेकिन परीक्षा नजदीक है, तो Ego उसे पढ़ाई की ओर प्रेरित करता है। यहाँ हम देखते हैं कि Ego के बिना व्यक्ति समाज में ढल नहीं सकता। यह हमारी इच्छाओं को नियंत्रित करता है और उन्हें उचित दिशा में मोड़ता है।

Superego: नैतिकता और आदर्श

Ego के विकास के बाद, जैसे-जैसे व्यक्ति समाज और परिवार से सीखता है, उसके भीतर एक तीसरी संरचना विकसित होती है— Superego।

Superego की विशेषताएँ—

1. नैतिक चेतना (Conscience)— यह हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत।
2. आदर्श (Ego Ideal)— यह हमारे आदर्श, मूल्य और लक्ष्य निर्धारित करता है।

3. सामाजिक नियंत्रण—Superego समाज और संस्कृति से प्रभावित होता है।

4. दबाव की प्रवृत्ति—कभी-कभी यह Id की इच्छाओं को पूरी तरह दबा देता है, जिससे अपराधबोध या चिंता उत्पन्न होती है।

उदाहरणस्वरूप, एक बच्चा चोरी करने से डरता है क्योंकि उसे सिखाया गया है कि चोरी गलत है। एक व्यक्ति परीक्षा में नकल करने का अवसर होने पर भी नकल नहीं करता, क्योंकि उसका Superego उसे रोकता है। यहां हमने देखा कि Superego व्यक्ति को नैतिक और सामाजिक रूप से स्वीकार्य दिशा देता है। लेकिन यदि यह अत्यधिक कठोर हो जाए, तो व्यक्ति अपराधबोध, चिंता और आत्म-दमन का शिकार हो सकता है।

फ्रॉयड द्वारा प्रतिपादित मन की त्रिस्तरीय सिद्धांत में Id, Ego और Superego का आपसी संघर्ष इस रूप में देखा जा सकता है—

Id कहता है— “मुझे अभी सुख चाहिए।”

Superego कहता है— “यह गलत है, ऐसा मत करो।”

Ego बीच में पड़कर कहता है— “दोनों को ध्यान में रखते हुए ऐसा रास्ता निकालो, जिससे इच्छा भी पूरी हो और नियम भी न टूटे।” यही संघर्ष मानव जीवन का मूल है। यही हमें आगे बढ़ने, निर्णय लेने और जीवन को अर्थ देने की दिशा देता है।

उपरोक्त सिद्धांत में हमने देखा कि फ्रॉयड के सिद्धांत में Id, Ego और Superego मानव व्यक्तित्व की तीन आधारभूत परतें हैं। Id हमारी मूल प्रवृत्तियों को दर्शाता है, Ego हमें वास्तविकता से जोड़ता है और Superego हमें नैतिक दिशा प्रदान करता है। लेकिन जीवन केवल इन तीन परतों से नहीं चलता। कई बार Id और Ego के बीच एक संक्रमणीय अवस्था की आवश्यकता होती है, जहाँ इच्छाएँ बिना सीधे दबाए सामाजिक ढाँचे में ढल सकें। इसी तरह, Ego और Superego के बीच भी एक ऐसा पुल चाहिए, जो नैतिकता और वास्तविकता को सहजता से जोड़ सके। यही वह स्थान है, जहाँ हम नए कॉन्सेप्ट्स विकसित कर सकते हैं। यहां Pre-Ego (Id और Ego के मध्य) तथा Ethico-Ego (Ego और Superego के मध्य) रखकर हम इस नए सिद्धांत की गहन विवेचना करेंगे।

Id और Ego के मध्य नया कॉन्सेप्ट— Pre-Ego

फ्रॉयड के सिद्धांत में हमने देखा कि Id, Ego और Superego मानव व्यक्तित्व के तीन आधारभूत घटक हैं। Id हमारी आदिम और स्वाभाविक इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करता है, Ego हमें वास्तविकता से जोड़ता है और Superego नैतिक दिशा देता है।

लेकिन एक प्रश्न उठता है—

‘क्या Id से Ego की ओर संक्रमण अचानक और सीधा होता है?’

‘या फिर बीच में कोई ऐसी मध्यवर्ती अवस्था होती है, जो Id की तीव्र प्रवृत्तियों को सीधे दबाने के बजाय उन्हें धीरे-धीरे सामाजिक और यथार्थपरक रूप में ढालती है?’

‘व्यक्ति द्वारा अपना Ego Satisfied करते समय उसका व्यवहार क्यों Id के रूप में प्रदर्शित होने लगता है?’

इसी प्रश्न का उत्तर खोजते हुए हम यहाँ एक नए कॉन्सेप्ट— Pre-Ego का विकास करेंगे।

Pre-Ego की परिभाषा

Pre-Ego वह मानसिक अवस्था है जो Id की कच्ची प्रवृत्तियों और Ego की यथार्थपरक चेतना के बीच पुल का कार्य करती है। यह एक ऐसी मानसिक संरचना है जो आदिम इच्छाओं (Id) को बिना अचानक दबाए, धीरे-धीरे वास्तविकता की ओर मोड़ती है। यह एक तरह से आधा स्वप्न और आधा यथार्थ की स्थिति है, जहाँ व्यक्ति अपनी इच्छाओं को कल्पना, प्रतीक या आंशिक संतुष्टि के माध्यम से व्यक्त करता है।

- Id कहता है— “मैं चाहता हूँ।”
- Ego कहता है— “इसे यथार्थ और परिस्थितियों के अनुसार करना होगा।”
- Pre-Ego कहता है— “मैं चाहने की प्रक्रिया को समझता हूँ, उसे धीरे-धीरे ढालता हूँ और Ego तक पहुँचने योग्य बनाता हूँ।”

- इसे हम "इच्छाओं का सभ्य रूपांतरण" कह सकते हैं।

Pre-Ego की आवश्यकता क्यों?

1. अचानक दबाव से तनाव— यदि Ego सीधे Id को रोक दे तो व्यक्ति में आक्रोश, हताशा और आंतरिक संघर्ष बढ़ जाता है।
2. धीरे-धीरे ढलने की प्रक्रिया— Pre-Ego Id की ऊर्जा को धीरे-धीरे Ego की दिशा में मोड़ता है।
3. सीखने और अनुकूलन का चरण— बचपन से किशोरावस्था तक व्यक्ति कई बार इच्छाओं और वास्तविकताओं के बीच सामंजस्य करना सीखता है। यह सीखने की प्रक्रिया Pre-Ego के बिना संभव नहीं होती।
4. व्यवहारिक परिष्कार— Pre-Ego व्यक्ति को यह समझने में मदद करता है कि हर इच्छा तुरंत पूरी नहीं हो सकती, लेकिन उसे सकारात्मक विकल्प मिल सकते हैं।

Pre-Ego की विशेषताएँ

1. अर्ध-चेतन अवस्था

- Id की तरह पूरी तरह अचेतन नहीं और Ego की तरह पूरी तरह सचेत भी नहीं।
- यह एक संक्रमणीय स्तर है, जहाँ इच्छाएँ धीरे-धीरे स्पष्ट रूप लेती हैं।

2. रचनात्मकता

- Pre-Ego इच्छाओं को दबाने के बजाय उन्हें नए रूप देता है।
- उदाहरण: बच्चा गुस्से में मारना चाहता है, लेकिन Pre-Ego उसे खेल या चित्र बनाने के रूप में व्यक्त करने की प्रेरणा देता है।

3. लचीलापन

- Ego कठोर तर्क और यथार्थ पर आधारित होता है, जबकि Pre-Ego लचीला और कल्पनाशील होता है।

4. सामाजिकरण की शुरुआत

- बच्चे को जैसे-जैसे सामाजिक नियम सिखाए जाते हैं, Pre-Ego इन नियमों को Id की प्रवृत्तियों से जोड़कर संतुलन बनाने का प्रयास करता है।

Pre-Ego का विकास

1. शैशवावस्था— जब बच्चा पहली बार समझता है कि हर रोने पर तुरंत दूध नहीं मिलेगा।
 2. बचपन— जब उसे सिखाया जाता है कि खिलौने साझा करो, दूसरों का भी ध्यान रखो।
 3. किशोरावस्था— जब वह अपनी इच्छाओं को सामाजिक दबावों के साथ तालमेल में लाना सीखता है।
- इन सभी चरणों में Pre-Ego धीरे-धीरे Ego के लिए आधार तैयार करता है।

Pre-Ego और सीखने की प्रक्रिया

Pre-Ego केवल Id और Ego के बीच मध्यस्थ नहीं है, बल्कि यह सीखने और आत्म-नियंत्रण की आधारशिला भी है।

- बच्चा पहले रोकर अपनी इच्छा जताता है (Id)।
- माता-पिता उसे समझाते हैं और वैकल्पिक उपाय बताते हैं (Pre-Ego सक्रिय)।
- बच्चा धीरे-धीरे समझता है कि हर समय रोने से काम नहीं बनेगा, उसे इंतजार करना होगा (Ego का विकास)।
- इस प्रकार यहाँ Pre-Ego, सीखने की प्रक्रिया को सहज और कम पीड़ादायक बनाते हुए बच्चे को धैर्य और संतुलन सिखाता है।

Pre-Ego और मानसिक स्वास्थ्य

यदि Pre-Ego का विकास स्वस्थ रूप से न हो, तो व्यक्ति या तो अत्यधिक Id-प्रधान (आवेगशील, अनुशासनहीन) हो सकता है या फिर अत्यधिक दबावग्रस्त (Ego के कठोर नियंत्रण में)।

- स्वस्थ Pre-Ego व्यक्ति को इच्छाओं का सकारात्मक दिशा में रूपांतरण करना सिखाता है।

• यह आक्रामकता को रचनात्मकता में और निराशा को धैर्य में बदलने की क्षमता प्रदान करता है। Pre-Ego और संस्कृति समाज और संस्कृति अपने बच्चों को इच्छाओं और वास्तविकताओं के बीच तालमेल सिखाने के लिए विशेष नियम, परंपराएँ और अनुष्ठान विकसित करती है। यही Pre-Ego को मजबूत करते हैं।

- भारतीय संस्कृति में "संस्कार" इसी भूमिका का निर्वाह करते हैं।
 - जापानी संस्कृति में अनुशासन और प्रतीक्षा को महत्व दिया जाता है।
 - पश्चिमी संस्कृति में आत्म-प्रेरणा और विकल्प खोजने की आदत डाली जाती है।
- इन सभी में Pre-Ego को समाज द्वारा आकार दिया जाता है।

Pre-Ego; एक मनोवैज्ञानिक नवाचार

Pre-Ego को हम Freud के मॉडल का आधुनिक विस्तार मान सकते हैं।

- Id हमें ऊर्जा देता है।
- Pre-Ego उस ऊर्जा को परिष्कृत करता है।
- Ego उसे यथार्थ में ढालता है।

निष्कर्षतः यहां हमने देखा कि Pre-Ego बिना किसी संघर्ष के Id और Ego के बीच सहज संक्रमण सुनिश्चित करता है, यहां Id और Ego के बीच अचानक संक्रमण नहीं होता, बल्कि उसमें एक संक्रमणीय अवस्था Pre-Ego होती है, जो इच्छाओं को सभ्य रूप में ढालकर Ego तक पहुँचने योग्य बनाती है। Pre-Ego न केवल आंतरिक संतुलन बनाता है, बल्कि रचनात्मकता, लचीलापन और सामाजिकरण का भी आधार

Ego और Superego के मध्य नया कॉन्सेप्ट: Ethico-Ego

अब हम Ego और Superego के मध्य नये कॉन्सेप्ट के बारे में जानेंगे। Freud के सिद्धांत के अनुसार, जब Ego वास्तविकता की माँग करता है और Superego नैतिक आदर्श थोपता है, तो इनके बीच एक टकराहट उत्पन्न होती है। Ego व्यावहारिक है एवं Superego आदर्शवादी और कठोर। Ego कहता है— "जो संभव है, वही करो।" Superego कहता है— "जो सही है, वही करो, चाहे कितना भी कठिन हो।" ऐसी स्थिति में यहां सामंजस्य कैसे होगा? इन परिस्थितियों में यहां इनके बीच एक नई संरचना की आवश्यकता होगी, जो व्यवहार की सही ढंग से व्याख्या कर सकें। इस संरचना को हम यहाँ "Ethico-Ego" नाम देंगे।

Ethico-Ego की परिभाषा

Ethico-Ego वह मानसिक संरचना है जो Ego की यथार्थवादी सोच और Superego की नैतिक कठोरता के बीच पुल (सेतु) का काम करती है। यह नैतिक आदर्श और वास्तविक परिस्थितियों के Ego बीच संवाद और लचीलापन स्थापित करती है। यह "व्यवहारिक नैतिकता" (Practical Morality) का आधार है। यहां,

- Ego केवल व्यावहारिक लाभ पर ध्यान देता है।
- Superego केवल नैतिक आदर्श पर जोर देता है।
- Ethico-Ego कहता है— "आदर्श और यथार्थ दोनों को ध्यान में रखकर संतुलित मार्ग खोजो।"
- इसे हम "नैतिक यथार्थवाद" (Moral Realism) की मनोवैज्ञानिक अवस्था कह सकते हैं।

Ethico-Ego की आवश्यकता

1. अत्यधिक नैतिकता से तनाव— यदि Superego पूरी तरह नियंत्रण कर ले, तो व्यक्ति अपराधबोध और चिंता से ग्रस्त हो जाएगा।
2. केवल यथार्थ पर टिके रहने से स्वार्थ— यदि Ego ही प्रबल रहे, तो व्यक्ति केवल लाभ और व्यावहारिकता में डूब जाएगा, जिससे मानवीय मूल्य खो जाएँगे।
3. समाज और व्यक्ति के बीच पुल— Ethico-Ego व्यक्ति को ऐसा मार्ग दिखाता है जहाँ वह समाज के नियमों का पालन भी कर सके और अपनी वास्तविक स्थिति के अनुसार निर्णय भी ले सके।
4. मानसिक संतुलन— यह व्यक्ति को कठोर आदर्श और कठोर वास्तविकता दोनों से बचाकर बीच का रास्ता दिखाता है।

Ethico-Ego की विशेषताएँ

1. लचीली नैतिकता

- यह Superego की कठोर नैतिकता को यथार्थ के अनुरूप लचीला बनाता है।
- उदाहरण: Superego कहेगा "हमेशा सत्य बोलो।" Ego कहेगा "कभी-कभी झूठ बोलना लाभकारी है।" Ethico-Ego कहेगा "जहाँ सत्य किसी को गहराई से चोट न पहुँचाए, वहाँ सत्य कहो, लेकिन यदि स्थिति नाजुक है, तो विवेकपूर्ण मौन या हल्का झूठ भी स्वीकार्य है।"

2. व्यावहारिक आदर्शवाद

- यह व्यक्ति को ऐसे आदर्श देता है, जिन्हें व्यावहारिक जीवन में निभाया जा सके।
- उदाहरण: "सभी की मदद करो" को Ethico-Ego बदलकर "जहाँ संभव हो, अपनी क्षमता के अनुसार मदद करो" में ढाल देता है।

3. सामाजिक सहानुभूति

- यह व्यक्ति को केवल नियमों के आधार पर नहीं, बल्कि सहानुभूति और परिस्थिति के आधार पर निर्णय लेने की प्रेरणा देता है।

4. मानसिक परिपक्वता

- यह परिपक्व निर्णय की अवस्था है, जहाँ व्यक्ति समझता है कि हर नियम को कठोरता से लागू करना संभव नहीं, लेकिन नियमों को पूरी तरह छोड़ना भी हानिकारक है।

Ethico-Ego और निर्णय-प्रक्रिया

Ethico-Ego को हम निर्णय संतुलन का मॉडल भी कह सकते हैं।

मान लीजिए एक डॉक्टर के सामने रोगी की स्थिति गंभीर है।

- Ego कहेगा— "मुझे ऐसा इलाज करना है जो सबसे व्यावहारिक और कम खर्चीला हो।"
- Superego कहेगा— "मुझे सबसे शुद्ध नैतिक रास्ता चुनना है, चाहे कितना भी महँगा हो।"
- Ethico-Ego कहेगा— "ऐसा इलाज चुनो जो व्यावहारिक भी हो और नैतिक जिम्मेदारी भी पूरी करे— यानी रोगी की जान बचे और उसका परिवार आर्थिक रूप से टूटे नहीं।"
- इस प्रकार Ethico-Ego जीवन को मानवीय और संतुलित बनाता है।

Ethico-Ego और समाज

1. कानून और विवेक

- कानून Superego की तरह कठोर होता है।
- लेकिन Ethico-Ego व्यक्ति को यह समझने की क्षमता देता है कि हर स्थिति में कानून को अक्षरशः मानना जरूरी नहीं।
- उदाहरण: किसी घायल को अस्पताल ले जाते समय ट्रैफिक सिग्नल तोड़ना— यह Superego के नियमों का उल्लंघन है, लेकिन Ethico-Ego इसे उचित मानता है।

2. नेतृत्व और नैतिकता

- एक अच्छा नेता वही है जो न तो केवल व्यावहारिक लाभ के पीछे भागे (Ego) और न ही केवल आदर्शवाद में खो जाए।
- Ethico-Ego नेतृत्व को संतुलित बनाता है।

3. शिक्षा

- यदि बच्चों को केवल कठोर नैतिक नियम सिखाए जाएँ, तो वे डरपोक या अपराधबोध से ग्रस्त हो सकते हैं।
- यदि केवल व्यावहारिकता सिखाई जाए, तो वे स्वार्थी हो सकते हैं।
- Ethico-Ego पर आधारित शिक्षा उन्हें विवेकपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण बनाती है।

Ethico-Ego और मानसिक स्वास्थ्य

यदि Ethico-Ego का संतुलन बिगड़ जाए तो—

- व्यक्ति या तो अत्यधिक कठोर और परफेक्शनिस्ट बन जाएगा Superego का वर्चस्व)।
- या फिर अत्यधिक स्वार्थी और व्यावहारिक बनकर मूल्यहीन हो जाएगा (Ego का वर्चस्व)।
- एक स्वस्थ Ethico-Ego व्यक्ति को संतुलन देता है—
- उसे अपराधबोध से बचाता है,
- उसे नैतिकता की कठोरता से मुक्त करता है,
- और उसे व्यवहारिक आदर्शवाद की ओर ले जाता है।

Ethico-Ego का व्यवहारिक उदाहरण

मान लीजिए, एक छात्र परीक्षा में नकल कर सकता है।

- **Ego** कहेगा— “नकल कर लो, नंबर आ जाएँगे।”
- **Superego** कहेगा— “नकल पाप है, बिल्कुल मत करो।”
- **Ethico-Ego** कहेगा— “नकल मत करो, क्योंकि इससे दीर्घकालिक नुकसान होगा। यदि कठिनाई है तो शिक्षक से मदद माँगो या परिश्रम बढ़ाओ।”
- यहाँ Ethico-Ego ने व्यावहारिक और नैतिक दोनों पहलुओं को जोड़ा।

निष्कर्षतः यहां हम देख सकते हैं कि Ego और Superego के बीच संघर्ष को हल करने के लिए एक नए कॉन्सेप्ट 'Ethico-Ego' की आवश्यकता है। यह कठोर नैतिकता और नंगे यथार्थ के बीच संतुलित मार्ग प्रदान करता है। Ethico-Ego व्यक्ति को विवेक, सहानुभूति और परिपक्वता के साथ निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। यह शिक्षा, समाज, नेतृत्व और मानसिक स्वास्थ्य सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Freud के सिद्धांत का आधुनिक विस्तार

Freud ने Id, Ego और Superego की त्रिस्तरीय संरचना दी है। लेकिन आधुनिक समाज में जहाँ निर्णय एवं व्यवहार जटिल और बहुआयामी हो गए हैं, वहाँ केवल यह त्रिस्तरीय संरचना पर्याप्त नहीं लगते। अब हम Freud के मॉडल को आगे बढ़ाते हुए दो नए कॉन्सेप्ट्स— Pre-Ego (Id और Ego के मध्य) तथा Ethico-Ego (Ego और Superego के मध्य) को शामिल करेंगे।

इस प्रकार अब हम Freud के तीन स्तर (Id–Ego–Superego) की बजाय इसे पाँच स्तर प्रस्तावित कर सकते हैं—

Id Pre-Ego Ethico-Ego Super ego

1. Id— आदिम इच्छाएँ
2. Pre-Ego— कल्पना और रचनात्मक संक्रमण
3. Ego— वास्तविकता का परीक्षण
4. Ethico-Ego— व्यवहारिक नैतिकता और लचीलापन
5. Superego— आदर्श नैतिक संरचना

अंतरिम निष्कर्ष—



यहां हमने देखा कि Freud के त्रिस्तरीय मॉडल में एक कमी थी— सीधे Id से Ego में और Ego से Superego में छलांग, जो कि संभव नहीं दिखती। इसीलिए हमने दो नए मध्यवर्ती कॉन्सेप्ट्स प्रस्तावित किए— Pre-Ego (Id

और Ego के बीच) इच्छाओं और यथार्थ के बीच कल्पनाशील और Ethico-Ego (Ego और Super Ego के बीच) व्यवहारिक नैतिकता। उपरोक्त रेखाचित्र में हम देख सकते हैं कि मानवीय व्यवहार जीवन भर Id, Ego, Super Ego से प्रभावित होता रहता है। व्यवहार उत्पत्ति के विभिन्न परिस्थितियों में कभी Id, कभी Ego तथा कभी Super Ego का प्रभाव देखने को मिलता है। व्यवहार का प्रदर्शन Id से Ego पर और फिर Ego से Id पर कभी Direct तो कभी संक्रमणीय अवस्था Pre-Ego होते हुए गुजरता है। यही नियम Ego और Super Ego के बीच लागू होता है। इस प्रकार यह नया मॉडल व्यक्तिगत निर्णय, पारिवारिक जीवन, समाज, साहित्य और मानसिक स्वास्थ्य में गहरी समझ प्रदान करता है। इस मॉडल में Pre-Ego कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता का आधार है। जबकि Ethico-Ego व्यवहारिक नैतिकता और सहानुभूति का आधार है। मेरा मानना है कि इन दो कॉन्सेप्ट के मिल जाने से Freud का मूल मॉडल और अधिक लचीला और मानवीय बन जाता है। यह पाँच-स्तरीय मॉडल दिखाता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व धीरे-धीरे आदिम इच्छाओं से उच्च नैतिकता तक पहुँचता है, और हर स्तर पर एक नया filter या moderator कार्य करता है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ: उपरोक्त सिद्धांत फ्रायड के मन के त्रि-स्तरीय सिद्धांत का एक संवर्धित मॉडल है, जो वर्तमान परिस्थिति में विभिन्न क्षेत्रों के सामाजिक परिवेश में दृष्टिगत मानवीय व्यवहार के प्रेक्षण एवं अध्ययन पर आधारित है।

Cite this Article-

'डॉ० संजय कुमार', "मन के पाँच-स्तरीय सिद्धांत (Five-Tier Theory of Mind)", *Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ)*, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:11, November 2024.

Journal URL- <https://www.researchvidyapith.com/>

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i40012

Published Date- 12 November 2024